अदम्य

नई चेतना, नए स्वर – मासिक अंक | जून 2026

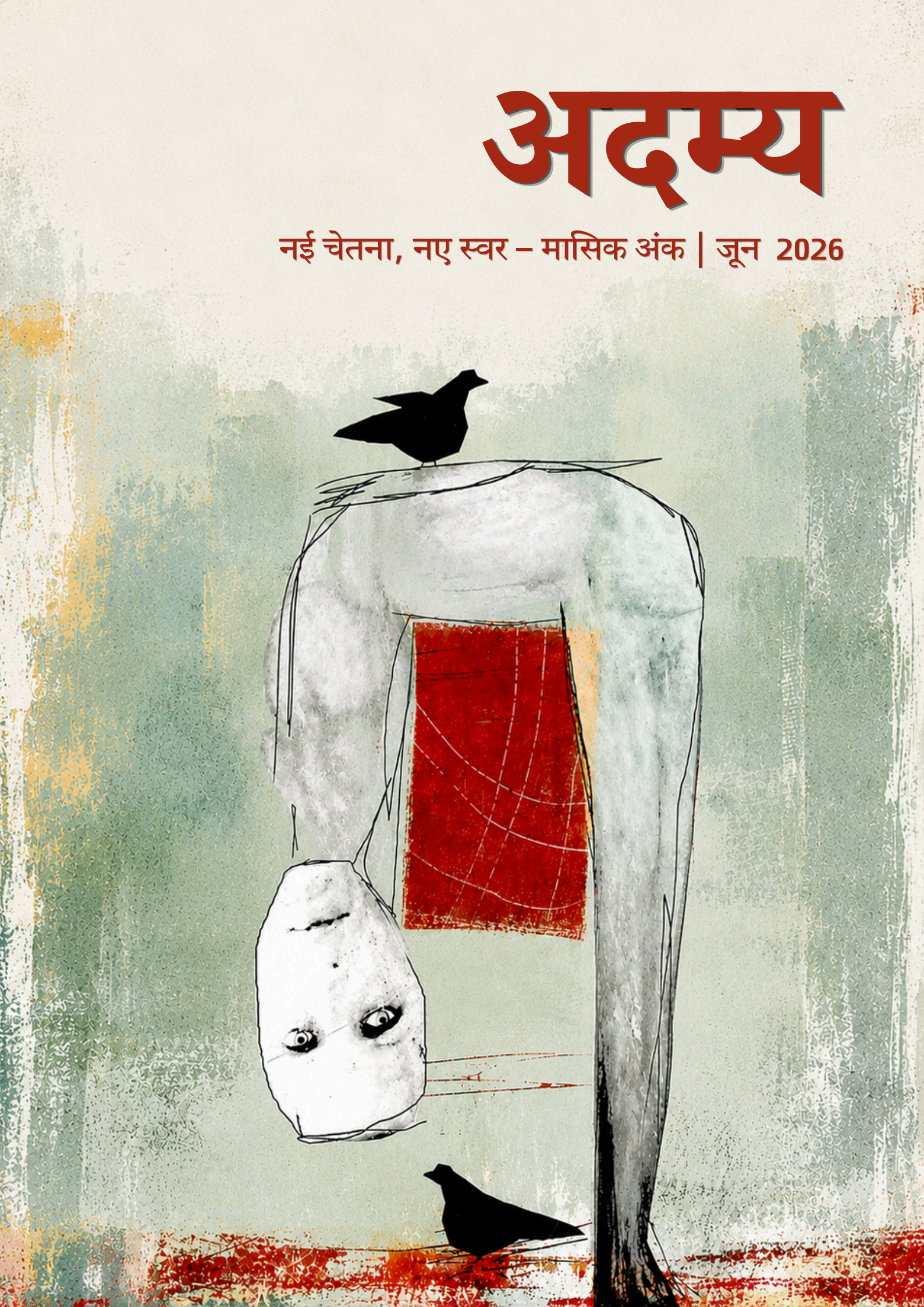

संपादक - विशेक
सह-संपादक - आरती
प्रूफरीडर - शिखा शिप्रा
सोशल मीडिया प्रभारी - अखिलेश कुमार

•

आवरण पृष्ठ - कमल राजपूत

•

विज्ञापन शुल्क

Full Pagen Rs. 400
Half Pagen Rs. 200
Qtr. Pagen Rs. 100
Back Cover n'Rs. 700- (four colour)
Inside Front n'Rs. 500- (four colour)
Inside Back n'Rs. 400- (four colour)

•

- पत्रिका पूर्णत: अवैतनिक और अव्यावसायिक है।
- अदम्य पत्रिका में प्रकाशित लेखों में आए विचार लेखकों के निजी हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।
- अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है।
- अदम्य पत्रिका से जुड़े सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन हैं।

•

संपर्क करें

ईमेल आईडी
adamyapatrika@gmail.com

वेबसाइट
adamyapatrika.in

अनुक्रम

संपादकीय

साहित्य से ओझल होती प्रकृति — विशेक (3)

लेख

कॉकरोच जनता पार्टी : लोकतंत्र की नई प्रजाति — धीरज कश्यप (6)

कविता

समय संग बदलते रिश्ते — अवनीश कुमार गुप्ता (9)

कहानी

लालची — डॉ. मोहम्मद इसरार (10)

रेखाचित्र

शीरो : जो केवल एक पालतू नहीं था — सन्दीप तोमर (16)

वेब सीरीज़ समीक्षा

'चिरैया': शादी, सहमति और संघर्ष — राधा (19)

पुस्तक समीक्षा

मृत्युरोग : प्रेम का अकेलापन — सोफ़िया हैदर (21)

क्लासिक गोल्डमाइन

द बेल जार — सिल्विया प्लाथ (अदम्य चयन) (23)

संपादकीय

साहित्य से ओझल होती प्रकृति

> “हालांकि मनुष्य का साहित्य के संदर्भ में प्रकृति तथा पर्यावरण से मुख मोड़ लेना यह दर्शाता है कि यदि मनुष्य अपनी गिरेबान में झांकेगा तो शायद वह उसमें औंधे मुंह गिर भी जाएगा।”

विशेक

संपादक, अदम्य पत्रिका

मनुष्य ने साहित्य के संदर्भ में प्रकृति और पर्यावरण को लेकर जिस तरह से मुँह मोड़ा है, अगर वह अपनी गिरेबान में झांके तो शायद वो उसमें गिर सकता है। मेरा ऐसा कहने के पीछे कई कारण हैं, जिन कारणों की चर्चा मैं आगे विस्तार से करूँगा। फिलहाल कुछ अहम बातों को स्मरण कर लेना जरूरी है, क्योंकि वे अहम बातें ही मेरे कथन को मजबूती प्रदान करेंगी।

प्रकृति और पर्यावरण के महत्व तथा मनुष्य के विकास में इसके योगदान को नकारा नहीं जा सकता है, फिर चाहे वह समय जल में काई के रूप में हो या फिर फलदार पेड़ के रूप में; प्रकृति और पर्यावरण ने जिस खूबी और खूबसूरती के साथ सामंजस्य बैठाते हुए पृथ्वी को एक खूबसूरत घर में तब्दील किया है, जहां मनुष्य के साथ-साथ बाकी जीव-जंतु भी जीवनयापन करते हैं, वह काबिलेतारीफ है। प्रकृति का अन्य जीव-जंतुओं के साथ यह सामंजस्य यह दर्शाता है कि जितने महत्वपूर्ण यह जीव-जंतु हैं, उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण यह प्रकृति और पर्यावरण है। सूक्ष्म से लेकर एक बड़ी इकाई तक सभी कुछ प्रकृति तथा इस पर्यावरण से जुड़ा हुआ है। यह प्रकृति और पर्यावरण मनुष्य समेत अन्य जीव-जंतुओं को वह सब कुछ प्रदान करती है जिनकी इन्हें बुनियादी रूप से जरूरत है। हालांकि इस स्थिति को निर्भरता कहा जा सकता है, लेकिन ऐसा कहना गलत होगा, बल्कि इसे तो परस्पर सहयोग कहा जाना चाहिए जो कि सटीक भी है, क्योंकि मनुष्य तथा अन्य